एक भी कम न हो!

दिलीप चिंचालकर

सुदूर ग्रामीण चीन में एक गांव है शुइजियान! अनुपजाऊ, असिंचित जमीन से घिरा। शुइजियान की आबादी एकाध हजार भर होगी। उनमें से कुछ पेट भरने के लिए कंद-मूल उगा लेते, पड़ोस के कारखानों के मजदूरी करते या फिर काम की तलाश में शहरों में चले जाते। पीछे बच जाते बूढ़े, बीमार और बच्चे। बच्चे भी वे ही जो अभी मजदूरी करने लायक नहीं हुए हैं।

गांव में एक प्राथमिक पाठशाला है। गांव की अर्थव्यवस्था की तरह ही जर्जर। पेट पीठ से चिपकाए दिन काटते हुए। शाला में 28 छात्र हैं। छोटे-बड़े सब एक ही जमात में क्योंकि शाला में एक ही कमरा और एक ही शिक्षक है। सुबह होते ही बच्चे शाला आ जाते हैं और जब तक खंभे पर लगी कील तक धूप नहीं निकल आती, मास्टरजी जो भी पढ़ाएं, पढ़ते रहते हैं। वैसे मास्टरजी समझदार हैं। प्रतिदिन श्यामपट पर लिखने के लिए सिर्फ एक चॉक से काम चलाते हैं। छोटे-छोटे अक्षर लिखते हैं। बड़े अक्षर लिखें तो चॉक ज्यादा खर्च होगी और फिर ज्यादा चॉक खरीदने के लिए शाला के पास धन नहीं है। फिर शाला में ही रहने वाले चार बच्चों के दो वक्त खाने की व्यवस्था भी उसी से करनी है।

एक बार मास्टरजी को अपने गांव वापस जाना है क्योंकि उनकी मां बहुत बीमार हैं। लेकिन वे तब तक यह गांव, यह शाला नहीं छोड़ सकते जब तक बदली में कोई दूसरा शिक्षक नहीं आ जाता। कम्यून के नियम ही ऐसे कठोर हैं। आसपास के कम्यूनों में खबर भेजी जाती है, तब वहां आती है वेई मिंजी - पड़ोसी कम्यून द्वारा भेजी गई बदली की शिक्षिका।

अरे वेई मिंजी को देखकर तो मास्टरजी चौंक जाते हैं। मिंजी बमुश्किल 13 वर्ष की छोकरी है जो शायद खुद कभी हाईस्कूल नहीं गई है। उसे आता है तो बस हाथ हिलाकर चेयरमैन माओ की प्रशंसा में गाया जाने वाला एक गीत। वह भी पूरा नहीं। उसकी केवल दो पंक्तियां। लेकिन मिंजी को ठीकठाक पढ़ना आता है और वह पुस्तक में से देखकर लिख भी सकती है। बस इसी योग्यता के आधार पर उसे अपना 'पदभार' और 15 जोड़ी चॉक देकर मास्टरजी मुक्त हो जाते हैं। जाते-जाते मास्टरजी उसे इतनी शिक्षा और देते हैं कि धूपधड़ी में समय पूरा होने तक किसी भी तरह सारे बच्चों को पढ़ाई में उलझाए रखना।

फिर इसी शिक्षा में एक चेतावनी भी जुड़ती है - उनके वापस लौटने तक शाला से एक भी बच्चा, छात्र कम न होने पाए। किसी एक ने भी शाला छोड़ दी तो शिक्षिका का वेतन नहीं मिलेगा - 'ध्यान रखना, समझीं, एक भी कम न हो।' लेकिन वेई मिंजी की तनख्वाह के 40 युआन कौन देगा, यह बात मास्टरजी और ग्राम प्रमुख स्पष्ट नहीं करते। परंतु जाते-जाते शिक्षक उसे एक प्रलोभन अवश्य दे जाते हैं कि यदि उनके लौटने तक सभी बच्चे शाला में टिके रहते हैं तो वे उसे 10 युआन का बोनस देंगे।

शिक्षिका अनुभवहीन है परंतु बच्चे तो बच्चे हैं - नटखट और खिलंदरे। उन्हें नकल करने के लिए पूरा श्यामपट छोटे-छोटे अक्षरों से भर कर वह कक्षा से बाहर पैड़ी पर जा बैठती है। छुट्टे छोड़े बच्चे क्यों कर पढ़ने लगे। वे शोर मचाने लगते हैं, आपस में धकियाते हैं, चोटी खींचते हैं और वे सारी बातें करते हैं जो उस स्थिति में संभव होती हैं। बच्चे कहते हैं कि श्यामपट पर लिखा हमें समझ में नहीं आता। वेई मिंजी कहती है लिखो। बच्चों केहर बहाने और शिकायत पर वेई मिंजी का एक ही उत्तर है, एक ही निर्णय है - लिखो। वह भी कोई कम अड़ियल नहीं है।

झांग हुइके काफी शैतान छात्र है। पर कक्षा में सभी शैतान नहीं, कुछ अच्छे बच्चे भी हैं। शैतान बच्चे भी मन के अच्छे हैं। झांग मिंगशान एक समझदार लेकिन अड़ियल छात्रा है। वह वेई मिंजी से उसकी शिक्षिका होने की दुहाई देकर कहती है कि झांग हुइके को डांटो। वही सारे झगड़ों और शोर-शराबे की जड़ है। पर झांग हुइके वेई मिंजी से कहता है कि मैं तुम्हारी नहीं सुनूंगा क्योंकि तुम तो फलां-फलां की बहन हो शिक्षिका नहीं। अड़ियल किशोरी और शैतान लड़के की धकापेल में कक्षा में रखी लंगड़ी मेज गिर पड़ती है और उस पर रखे चॉक भी। फिर इन दो का झगड़ा 'महाभारत' में बदल जाता है। कुछ बच्चे इस तरफ तो कुछ उस तरफ। पैरों के नीचे आ जाने के चॉकों की जो गत बनती है, वह वेई मिंजी के ध्यान में नहीं आती। अपनी उंगलियां लड़ने वालों के जूतों तले कुचले जाने के खतरे के बावजूद झांग मिंगशान चॉक के टुकड़े समेट लेती है।

दूसरे दिन कक्षा में फिर हंगामा मचता है। आज खुराफाती झांग हुइके ने मिंगशान की डायरी छीन ली है और वह उसे जोर से पढ़ना चाहता है। अपनी निजी डायरी कोई सलीकेदार लड़की किसी ऊधमी लड़के को पढ़ने देगी? मामला शिक्षिका के सामने आता है। अब तक एक ही उत्तर 'लिखो' देने वाली वेई मिंजी इस पर निर्णय देती है कि पढ़ो! लो डायरी में कल के फसाद का ब्यौरा निकलता है। कैसे चॉकों की दुर्दशा हुई। किस तरह पुराने शिक्षक किफायत से चॉक उपयोग में लाते थे। हमारी शाला कितनी गरीब है। शिक्षिका क्यों नहीं सबकी लगाम कसती।

तीसरी सुबह वेई मिंजी पाती हैं कि उसका नटखट छात्र कक्षा से गायब है। दूसरे छात्र बताते हैं कि वह कुछ बड़े बच्चों और सन झीमेई नाम की एक लड़की के साथ काम की खोज में शहर चला गया है। झांग हुइके के पिता नहीं हैं और मां बहुत बीमार हैं। परिवार पर कर्ज भी बहुत है इसलिए हुइके को ऐसी 'पढ़ाई' से ज्यादा जरूरी लगता है कि कुछ काम, कुछ कमाई। काम करना जरूरी है ये सारी बातें वेई मिंजी को खास समझ में नहीं आतीं। उसे याद रहती है तो शिक्षक की चेतावनी - एक भी छात्र कम न होने देना। गांव का मुखिया सारे झंझट से पल्ला झाड़ लेते हैं। अब जरूरी हो जाता है कि कोई शहर जाए और हुइके को वापिस लाए। वेई मिंजी तय करती है कि अब वही शहर जाएगी।

शहर जाना मुश्किल नहीं था। फिर भी बस के टिकिट लायक पैसा तो चाहिए ना। एक नहीं तीन टिकटों का। एक के जाने और दो के लौटने का। वेई मिंजी के पास पहने हुए कपड़ों और कुछ साबुत बची चॉकों के अलावा कुछ नहीं था। शहर जाने का खर्च का कोई अंदाज भी नहीं था। एक छात्र बताता है कि कुछ वर्ष पहले वो मां के साथ शहर गया था तो शायद ढाई युआन किराया लगा था। साढ़े सात युआन जुटाने के लिए कक्षा के सारे बच्चे अपने पास के छोटे-बड़े, खरे-खोटे सिक्के खुशी-खुशी अपनी शिक्षिका को देते हैं। आवश्यक राशि से वे फिर भी कम पड़ जाते हैं। अब और पैसा कहां से आ सकता है इस पर पूरी कक्षा गंभीरता से विचार-विमर्श करती है! एक छात्र को सूझता है कि बगल के ईंट कारखाने में मजदूरी की जाए। जैसे बच्चे, वैसी बच्ची शिक्षिका। सब उत्साह से ईंट कारखाने जा धमकते हैं और बिना किसी से पूछे-ताछे ईंट यहां से वहां जमाने लगते हैं। कुछ ईंटें गिरती हैं, कुछ टूटती बिखरती हैं। कोलाहल सुनकर कारखाने का मैनेजर वहां पहुंचता है और बानर सेना की कारगुजारी देखकर बौखला जाता है। लेकिन उनकी समस्या सुनकर उसे रहम आ जाता है और वह अपनी ओर से उन्हें दस युआन दे देता है।

अब वेई मिंजी के पास बस किराए से ज्यादा धन हो जाता है। उसके अंदर की शिक्षिका सोचती है कि अब पूरी कर्मठ टोली की थकान मिटानी चाहिए। वह भी विदेशी शीतल पेय से जो दूर-दूर से देखे सबने थे विज्ञापनों में, पर किसी ने भी अब तक चखे नहीं थे। वेई मिंजी के पास इतने ही अतिरिक्त युआन थे कि बस दो डिब्बे खरीदे जा सकें। सब बच्चे बारी-बारी से अपने हिस्से का एक-एक घूंट पीकर प्रसन्न हो जाते हैं।

अपनी शिक्षिका को छोड़ने सारे बच्चे बस अड्डे तक आते हैं। पैसा जुटाने की पूरी कवायद कही-सुनी बातों के आधार पर, बिना खास सोचे समझे और कमजोर गणित के सहारे की गई थी। इसलिए बस अड्डे पहुंचने पर पता चलता है कि उतने युआन में तीन तो क्या एक भी टिकिट खरीदी नहीं जा सकती थी। अब यह तय होता है कि वेई मिंजी बिना टिकिट बस में चढ़ जाए। लेकिन उनकी शिक्षिका बिना टिकिट पकड़ी गई तो? कितनी बदनामी होगी! बच्चे सोचते हैं कि यदि वे सभी बस में सवार हो जाते हैं तो कंडक्टर उनकी बेटिकिट शिक्षिका तक पहुंच नहीं पाएगी। बच्चों को अपनी बदनामी की चिंता नहीं है। बस उनकी शिक्षिका पर आंच नहीं आए। पर उनकी यह तरकीब कारगर नहीं होती। उन सभी को वहीं पर उतार दिया जाता है और उनकी शिक्षिका को गांव से बाहर बस निकलने के बाद। लेकिन वेई मिंजी अब वापिस नहीं लौटती है। वह पैदल ही शहर की ओर चल पड़ती है।

बड़े शहर की चहल-पहल देखकर वेई मिंजी जरा भी नहीं घबराती, थकी जो होती है। यहां-वहां पूछते-पूछते वह झांग हुइके के पते पर जा पहुंचती है। हुइके जिस लड़की सम झीमेई के साथ गांव से आया था, वह मिंजी को नई परेशानी में डाल देती है। वे साथ आए जरूर थे लेकिन हुइके अपने चंचल स्वभाव के कारण रेलवे स्टेशन पर खो गया था। अब वेई मिंजी और सन झीमेई मिलकर तीन दिन पहले गुम हुए हुइके को प्लेटफॉर्म पर ढूंढते हैं। सन झीमेई का मजदूरी का समय खोटी करने के लिए मिंजी को उसे पारिश्रमिक भी चुकाना पड़ता है। साथियों को खो देने के बाद हुइके क्यों कर स्टेशन पर टिका रहता? वहां से निकल कर हुइके शहर की गलियों में भटकने लगता है। भूख से व्याकुल हो खोमचों-रेहड़ियों के आसपास मंडराने लगता है। उसकी लालची नजरों के कारण ग्राहक उठ न जाए, इस आशंका से एक ढाबे की मालकिन उसे भरपेट खाना देती है और अपने ही यहां छोटा-मोटा काम भी।

स्टेशन पर अकेली बैठी वेई मिंजी को एक महिला सुझाव देती है कि गुमशुदगी की सूचना लिखकर वह स्टेशन के आसपास चिपका दे तो शायद कुछ काम बने। वेई मिंजी अपनी सारी पूंजी खर्च कर कागज, कलम और थोड़ी सी स्याही खरीद लाती है। रात भर जागकर वह सौ-पचास कागजों पर हुइके के खो जाने की सूचना लिखती है। स्टेशन पर बैठा एक मुसाफिर उन पर्चों को देखकर बड़बड़ाता है कि पानी घोलकर फीकी स्याही से लिखे गिचपिच अक्षर कौन पढ़ेगा? फिर उनमें पता तो लिखा ही नहीं है। कोई मदद करना भी चाहे तो संपर्क कहां करेगा? भूखी, थकी और परेशान हालात में अब वेई मिंजी की समझ में कुछ भी आना बंद होने लगता है। कोई सही तरीका बता दे और वह उसे अपना ले। सलाह के लिए वह उस मुसाफिर के पीछे पड़ जाती है। वेई मिंजी को टालने के लिए मुसाफिर उससे टेलीविजन पर जाने को कह देता है। बेचारी वेई मिंजी राहगीरों से टेलीविजन स्टूडियो का रास्ता पूछने लगती है।

एक देहाती बच्ची टेलीविजन दफ्तर पहुंच भी जाए तो क्या कर लेगी? कोई उसकी बात क्यों सुनेगा? ने तो वेई मिंजी के पास विज्ञापन का खर्च देने के लिए पैसा है, न सिफारिश और न अपने शिक्षिका होने का कोई प्रमाण या पहचान पत्र। वह रिसेप्शनिस्ट की मेज के आगे ही बढ़ नहीं पाती। रिसेप्शनिस्ट के किसी भी प्रश्न का उसके पास उत्तर नहीं था। हार कर वह रिसेप्शनिस्ट से ही पूछती है कि वह क्या करे? खीझ कर रिसेप्शनिस्ट उसे टेलीविजन केंद्र के निदेशक से मिलने को कह देती है। पर भीतर कार्यालय में जाकर नहीं, मुख्य दरवाजे के बाहर। क्योंकि अब चौकीदार भी उसे अहाते के बाहर करने पर उतारू हो जाता है।

वेई मिंजी टेलीविजन दफ्तर के बाहर आते-जाते चश्मा लगाने वाले, पैदल या साइकिल सवार को रोक कर पूछती है कि क्या वह केंद्र निदेशक है। मोटर-कारें तेजी से गुजरती जाती हैं इसलिए उनकी सवारियों को वह पूछ नहीं पाती। पूछताछ में कोई छूट न जाए, इसलिए कई बार तो वह साईकिल वालों के पीछे दूर तक दौड़ भी लगाती है। सुबह से शाम हो जाती है। दफ्तर बंद हो जाते हैं और रास्ते सुनसान। केंद्र निदेशक नहीं मिलते हैं। वेई मिंजी निढाल हो दरवाजे के पास सो जाती है। रात में तेज हवा चलती है तो उसके लिखे पर्चे बिखर जाते हैं। मुंह अंधेरे आए सफाई कर्मचारी उन्हें झाड़कर ले जाते हैं। वह ठंड से गुड़ीमुड़ी ही सोई रहती है। सुबह होते ही पास के नल से हाथ मुंह धोकर वेई मिंजी फिर से केंद्र निदेशक को ढूंढने के अभियान में लग जाती है।

दोपहर बाद केंद्र निदेशक को कोई खबर करता है कि एक देहाती बच्ची दो दिनों से दरवाजे पर खड़ी असहाय उसे ढूंढ रही है। वह खिड़की से झांक कर नीचे देखता है - एक दुबली सी असहाय लड़की दौड़-दौड़ कर राहगीरों से पूछताछ कर रही है। वह हैरान रह जाता है। नाराज भी होता है। इससे पहले क्यों किसी ने उसे इस बात की सूचना नहीं दी? आंखें मींचकर नियमों का पालन कर रहे कर्मचारी क्या मानवता बिल्कुल भूल चुके थे? अब केंद्र निदेशक स्वयं दरवाजे तक जा कर वेई मिंजी को अंदर ले आता है।

वेई मिंजी को तो मानो भगवान ही मिल जाते हैं। एक विशेष कार्यक्रम में कैमरे के लैंस की ओर देखकर हुईके को लौट आने के लिए कहते-कहते वेई मिंजी की रुलाई फूट पड़ती है। उसकी मार्मिक अपील दर्शकों और ढाबे में बर्तन मांज रहे हुइके के दिल को भी छू जाती है। किस्सा लंबा है, थोड़े में कहें तो अंत में शिक्षिका को न केवल उसका खोया हुआ छात्र मिल जाता है बल्कि टेलीविजन कार्यक्रम के कारण शाला के लिए ढेर सारे तोहफे, फर्नीचर और नकद सहायता भी। फूल-झड़ियों से सजी गाड़ियों के काफिले में वेई मिंजी और हुइके टेलीविजन दल के साथ जब वापस गांव पहुंचते हैं तो सभी चकित रह जाते हैं। उनके स्वागत में सबसे आगे होता है वह ग्राम प्रमुख जो पहले शहर जाने के लिए शिक्षिका को मना कर चुका था।

वेई मिंजी के बजाए ग्राम प्रमुख यदि शहर चले जाता तो क्या उसे हुइके मिल पाता? मिल भी जाता तो क्या उसका मन परिवर्तित होता और वह राजी-खुशी लौट आता? क्या उसे तोहफे और आर्थिक सहायता मिल पाती जिससे शाला भवन की मरम्मत और हुइके का कर्जा चुकाया जा सकता? यह सफर तो वेई मिंजी को ही करना था। तभी तो उसके अड़ियल रवैये और इरादे के पक्के होने में फर्क हो पाता। अपने छात्रों से इस किशोरी का जुड़ाव तो पहले ही हो चला था लेकिन उनकी शिक्षिका बनने का गौरव उसे इस परीक्षा में पास हुए बगैर नहीं मिलता। परिस्थितिवश करनी पड़ी बदली की नौकरी जीवन का पाठ पढ़ा गई। शुरूआत में वेई मिंजी को भले ही दस युआन का पुरस्कार दिखाई देता रहा हो, चुनौतियों के साथ उसका ध्येय ऊपर उठता गया। महीने भर बाद अपने कम्यून में लौट जाने वाली वेई मिंजी अब पहले की सामान्य किशोरी नहीं रही। थोड़े ही वर्षों में वह अपने गांव, अपने क्षेत्र की कर्मठ नेता बन गई हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

'नॉट वन लैस' यानी 'एक भी कम न हो' नाम से बनी यह चीनी फिल्म सत्य घटना पर आधारित होने का दावा नहीं करती। लेकिन सच में ऐसा कर गुजरने की प्रेरणा निश्चित देती है। बगैर चमकीली पोशाकों, सितारा अभिनेताओं के, धूल भरी बंजर दृश्यावली के बावजूद यह सिनेकृति देखने वाने को बांधे रखती है। इसके निदेशक झांग यिमू पहले भी 'रेजद रैड लैंटर्न' (लाल कंदील उठाओ) के लिए पुरस्कार पा चुके हैं।

दिलीप चिंचालकर का ईमेल पता है: gauraiya@hotmail.com

साभार: गांधी मार्ग (जनवरी-फरवरी 2007)

प्रकाशक: अनुपम मिश्र
गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली 110 002
टेलीफोन: 011 - 23237491, 011 - 23237493